Research Review
The Refereed & Peer Review International Journal
www.researchreviewonline.com
ISSN: 2321- 4708
June. 2021, Year - 7 (98)
Paper ID: RR779604

स्तुतिकुसुमाञ्जलि में शिव स्वरूप

પ્રેષક
ડૉ.રાઠોડ શારદાબેન વી.
આસિ. પ્રોફેસર, સંસ્કૃત વિભાગ
આર. આર. લાલન કોલેજ ભુજ

'स्तुतिकुसुमाञ्जलि' महाकवि श्रीजगद्धर भट्ट विरचित श्रेष्ठ स्तोत्र काव्य है। ' स्तुतिकुसुमाञ्जलि' संस्कृत वाङमय का आदरणीय स्तोत्र काव्य है । इसमें इन्होंने आशुतोष भगवान शिव की स्तुतिगीत गाया है । अडतीस स्तोत्रात्मक इस स्तुति काव्य में कवि ने शिव के विविध चरित्रों, लीलाओं एवं पौराणिक आख्यानों का निर्देश करते हुए भक्ति रस की अजस्र धारा प्रवाहित कि है, जिस भक्ति की पीयूषधारा में भक्त हृदय सहज में ही डूबकी लगाने लगता है ।

कुसुमाञ्जलि की तृतीय अञ्जलि में शिव के विभिन्न स्वरूपों यथा अर्धनारीश्वर, हरिहर,अष्टमूर्ति आदि का संक्षेपण विवेचन प्रस्तुत है । शिव का सगुण एवं निर्गुण, दोनों रूपों का विवेचन हुआ है, परंतु स्तुतिकुसुमाञ्जलि के भक्ति काव्य होने का कारण सगुण रूप की विशेष महत्ता है । जगत के समग्र विस्तारका एकमात्र कारण तत्त्व शिव है –

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे
भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥ ऋग्वेद.10/121/1

श्री जगद्धरभट्ट ने शिव के कल्याणकारी स्वरूप का सबसे अधिक वर्णन किया है। भक्तकवि जगत् कल्याण की भावना से अनुप्राणित होकर राष्ट्र मङ्गल की कामना करता है -

यद्दर्शनामृतसुखानुभवेन धन्याः,
नेत्रोत्पलानि चिरमर्धनिमीलितानि।
दृङ्मार्गगोचररवीन्दुकरप्रसङ्ग –

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-7-issue-98-june-2021/RRJ779604

ISSN: 2321- 4708
June. 2021, Year - 7 (98)
Paper ID: RR779604

भङ्ग्येव बिभ्रति शिवः शिवदः स वो अस्तु।

स्तुतिकुसुमाञ्जलि. 3/17

अर्थात् – भाग्याशाली लोग जिसके दर्शनामृत के पान से आनंद में अर्द्धनिर्मीलित नयन हो जाते तथा शिव भी लोक के त्रिविध ताप की शांति के लिए अर्द्धनिर्मीलित नेत्र रहते , वे प्रभु सदाशिव जगत् का कल्याण करें ।

एक पद्य में कवि अपने आराध्य से अपनी तुलना करने के व्याज से उनके परममाङ्गलिक रूप की महिमा का गान करता है। कवि कहता है कि है नाथ । आप निर्गुण है तो में भी निर्गुण हूँ । आपका धाम शून्य है तो मेरा भी धाम शून्य (अकिंचन) है । आप गौ पर स्थित है तो मैं भी गौ (पृथ्वी) पर स्थित हूँ । अन्तर केवल इतना ही है कि आप लोकोपकारिन् शिव हैं और मैं अशिव हूँ –

त्वं निर्गुणः शिव तथाहमथ त्वदीयं
शून्यं परं किमपि धाम तथा मदीयम् ।
त्वं चेद्गवि प्रविदधासि धृतिं तथाहं
कष्टं शिवस्त्वमशिवस्तु विधिक्षतोअहम् ॥ -स्तुतुकुसुमाञ्जलि. 3/18

इसी प्रकार अन्य पद्यों में भी कवि ने उनके शिव रूप का सफल चित्रण किया है । जहाँ कवि वाणी और मन से पर शिव के निर्गुण रूप की व्याख्या करता है वहीं उनके सगुणात्मक रुप को नाना प्रकार से सुसज्जित कर अपने हृदय में लोकोत्तर आनंद का अनुभव करता है । शिव रूप दर्शन से कवि अपने को कृतार्थ समझता है । वह कहता है जिसमें शेषनाग प्रभृति सर्प केयूर की शोभा पाते है एवं आकाशगङ्गा जिनके मस्तक पर उल्लसित हो रही हैं वे कामारि शिव आपकी इच्छा पूर्ण करें –

अङ्गं भुजङ्गरचिताङ्गदभङ्गितुङ्गं
त्वङ्गत्तरङ्गगनाङ्गनसङ्गिगङ्गम् ।
बिभ्रद्विभुर्विहितरङ्गदनङ्गभङ्ग
मङ्गी करोत्वरमभङ्गुरमिङ्गितं वः॥ -स्तुतिकुसुमाञ्जलि 3/8

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-7-issue-98-june-2021/RRJ779604

ISSN: 2321- 4708
June. 2021, Year - 7 (98)
Paper ID: RR779604

अर्धनारीश्वर रूप : -

यह शिव का अतिअद्भुत एवं प्रसिद्ध रूप है । आगम शास्त्र में इसे प्रकाश एवं विमर्श रूप माना गया है । पौराणिक मान्यता के अनुसार प्रजापति ब्रह्मा द्वारा जब सृष्टि ला विकास सम्भव नहीं हो सका तो उन्हें बहुत खेद हुआ । इनकी उद्विग्नावस्था को देखकर आकाशवाणी हुई ,भगवन् ! मैथुनी सृष्टि कीजिए ।

शिव और शक्ति एक दूसरे से उसी प्रकार अभिन्न हैं, जिस प्रकार सूर्य और उसका प्रकाश , अग्नि और उसका ताप तथा दूध और उसकी सफेदी । शिव की आराधना शक्ति की आराधना है और शक्ति की उपासना शिव की उपासना है । शिव एवं शक्ति की विषमता एवं विरोध का सामञ्जस्य ही परमात्म तत्त्व का रहस्य है । इन सभी सिद्धान्तों एवं मान्यताओं को बुद्धिस्थ कर महाकवि श्री जगद्धरभट्ट ने स्तुतिकुसुमाञ्जलि में शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप का वर्णन किया है । इन्हें एक ही विग्रह में शिव और शिवा के स्वरूप का भान होता है । कवि कहता है -

वन्दे महयमलययूखमौलिरत्नं
देवस्य प्रकटितसर्वमङ्गलाख्यम् ।
अन्योन्यं सदृशमहीनकङ्कणाङ्क
देहार्धद्वितयमुमार्धरुद्धमूर्तेः ॥ - स्तुतिकुसुमाञ्जलि 3.19

अर्थात् – जहाँ एक तरफ चंद्रमुकुट को धारण किए हुए , सम्पूर्ण मङ्गलों के दायक शिव नाम से सुशोभित और वासुकि आदि सर्पों का आभूषण धारण किए शिव का देहार्थ है वहीं दूसरी और अर्धचंद्र मुकुट धारण कि हुई भगवती सर्वमङ्गला बहुमूल्य अलंकारों से अलङ्कृत हैं, इस प्रकार उमार्ध से अवरुद्ध मूर्ति वाले शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप के दोनों अर्धभाग को प्रणाम करते हैं ।

जिस अर्धनारीश्वर शरीरमें एक तरफ शिव द्वारा है – प्रियतमे ! सांसारिक वासनाओं से तप्त लोगों के कल्याण हेतु तुमने अद्भुत प्रगल्भता धारण की है, वहीं पार्वती द्वारा – हे प्रियतम ! बडा आश्चर्य है की भवभय पीडित आर्त्तजनों के अभिलषित मनोरथ को पूर्ण

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-7-issue-98-june-2021/RRJ779604

ISSN: 2321- 4708
June. 2021, Year - 7 (98)
Paper ID: RR779604

करने के लिए आपने विलक्षण प्रगल्भता धारण की है, इस प्रकार अभिन्न भाव से मिले हुए शिव और शिवा का एक ही मुख से निकला हुआ यह वाक्य परस्पर समरसता को प्राप्त करता है –

आश्चयँ तव दयिते हितं विधातुं
प्रागल्भ्यं किमपि भवोपतापभाजाम् ।
अन्योन्यं गतमितिवाक्यमेकवक्त्र
प्रोद्भिन्नं घटयति यत्र सामरस्यम् ॥ -स्तुतिकुसुमाञ्जलि.21/8

कवि कहता है, प्रभु के स्तवन एवं अर्चन के समय प्रणाम करनेवाले भक्त संदेह में पड़ जाते हैं की यह शिव है कि शिवा है -

किमयं शिवः किमु शिवा अथ शिवा
विति यत्र वन्दनविद्यौ भवति ।

कवि उत्प्रेक्षा करता है कि अर्धनारीश्वर शरीर मानो शिव और पार्वती के हृदय की अभिन्नता को द्योतित करने के लिए बाह्य रूप से भी अभिन्न बना हुआ है ।

हरिहरस्वरूप :-

अर्धनारीश्वर स्वरूप की तरह हरिहरस्वरूप भी आश्चर्योत्पादक है । कवि ने शिव के हरिहर स्वरुप का सफल चित्रण किया है एक ही मूर्ति में शंकर और विष्णु दोनों के दर्शन बडे ही सुखावह हैं ।

इनके हरिहर स्वरूप में पाञ्चजन्य शंङ्ख एवं वक्षःस्थल पर कौस्तुभमणि, विष्णु भागार्थ एक ओर पार्श्ववर्तिनी लक्ष्मी को सुशोभित कर रहा है एवं दूसरी और मुकुट पर चंद्रमा, कण्ड में विष एवं करतल में अमृतकलश शिव भागार्थ की महिमा को परिमण्डित कर रहा है ।

सर्पराज वासुकि जहाँ एक ही विग्रह में जटाजूट बाँधने एवं शयनपिठ दोनों उपयोगिताओं का स्मरण कर आनंदमग्न हो जाते हैं कि मैं धन्य हुँ कि हरि और हर,दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा हूँ–

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-7-issue-98-june-2021/RRJ779604

ISSN: 2321- 4708
June. 2021, Year - 7 (98)
Paper ID: RR779604

आपीडबंधनविधौ शयने च वष्मॅ,
पर्याप्तभोगविभवं बहु मान्यमानः ।
यत्र प्रहृष्यतित्रामुरगाधिराजः
तन्मङ्गलं दिशतु हारिहरं वपुर्वः ॥ स्तुतिकुसुमाञ्जलि.4/2

अष्टमूर्तिस्वरुप : -

श्री सदाशिव की आठ मूर्तिया सुप्रसिध्द हैं, वे है – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, यजमान, चंद्रमा और सूर्य महाकवि कालिदास ने भी अष्टमूर्ति शिव की स्तुति की है । वस्तुतः अष्टमूर्ति शिव की कल्पना विश्व की कल्पना है ।

महाकवि ने शिव की आठों मूर्तियों का पृथक् – पृथक् स्तवन किया है । इनके अनुसार शिव की पृथ्वी मूर्ति शेषनाग की मस्तक रूपी सिंहासन पर बिराजमान है और यह औषधियों द्वारा विश्व की रक्षा करती है । जगत् के बाह्य और आभ्यांतर पवित्रता का कारण जल इनकी द्वितीय मूर्ति है । संसार में जठराग्नि , दावाग्नि, वाडवाग्नि, के रूप में प्रसिध्द शिव की तृतिय अग्निमूर्ति है । प्राणपानादि पंच वायुओं के रूप में रहनेवाली वायु भी शिव की चतुर्थ मूर्ति है ।शब्दगुणात्मक आकाश पञ्चमूर्ति है, यह सूर्य और चंद्रमा का आधार है तथा चंद्र सूर्य काल के आधार हैं ।

दिग्देशाकारकालैरकलितविभवं यन्महद्विजभूतं
भूतग्रामस्य यस्य त्रिभूवनविषयं वस्तुजातं विवर्तः ।
यस्मिन्हेम्नीव नानाभरणपरिकरो लीयते विश्वमंते
तद्भिन्नेष्वप्यभिन्नं भव भवसि परं ब्रह्म तस्मै नमस्ते ॥

- स्तुतिकुसुमाञ्जलि.33/44

इस प्रकार कवि ने शिव की अष्टमूर्तियों का पृथक् – पृथक् वर्णन कर चतुर्दश प्रकार के भूतसृष्टी के मूल कारण ब्रह्म स्वरूप श्रीसदाशिव के चरणों में प्रणति समर्पित करता है ।

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-7-issue-98-june-2021/RRJ779604

ISSN: 2321- 4708
June. 2021, Year - 7 (98)
Paper ID: RR779604

इस प्रकार कविने स्तुतिकुसुमाञ्जलि में शिव के विभिन्न रुपों, आभूषणों वस्त्रों एवं स्थानों का स्तुतुक्रम में वर्णन किया है, जिसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया ।

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-7-issue-98-june-2021/RRJ779604